بسم الله الرحمن الرحيم

हुवल हाफ़िज़

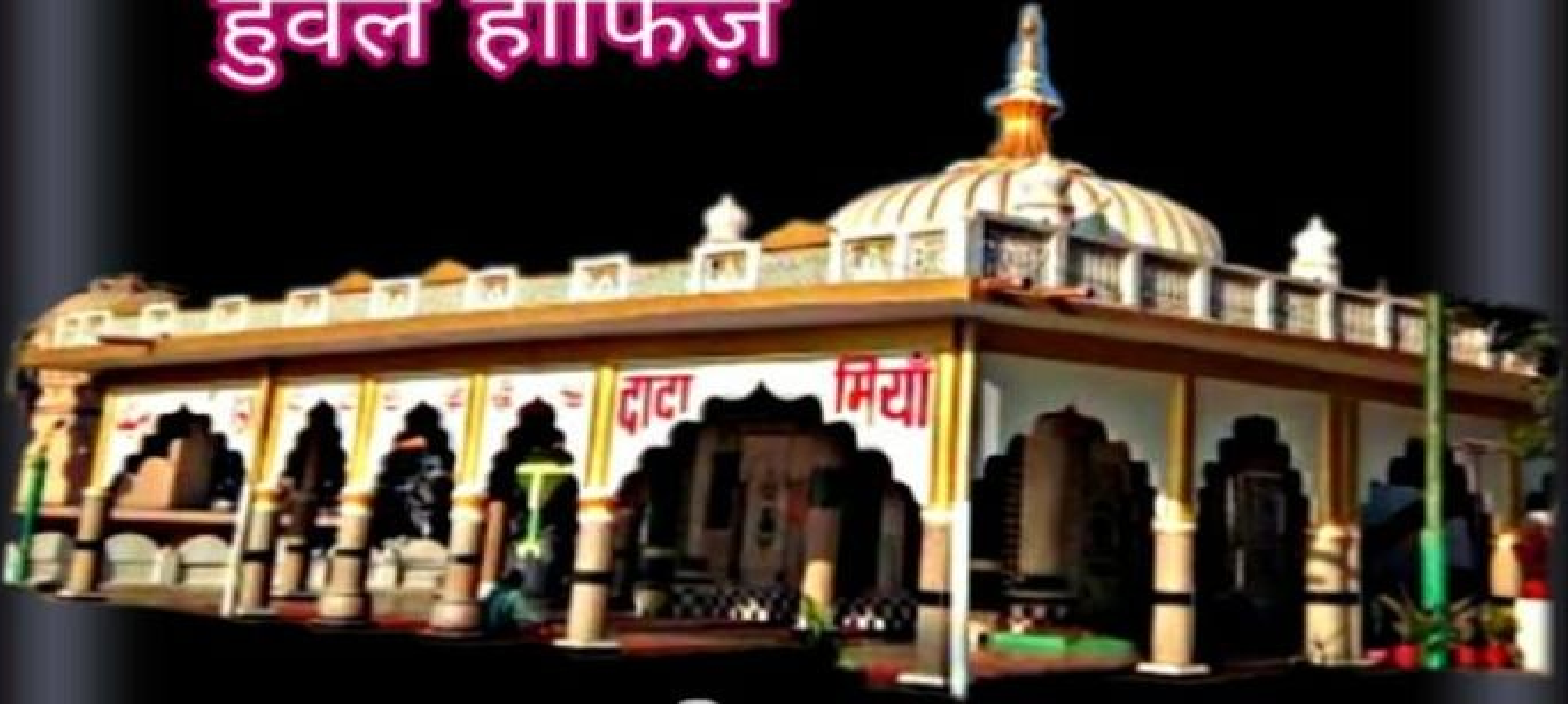

सवाने हयात

हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अली शाह दादा मियां र.ह. जबलपुर

मुसन्निफ़ :- आलीजनाब सैय्यद नायाब अली मद्देजिल्लहू आ़ली

اعوذ باللہ من الشیطان الرجیم۔

بسم اللہ الرحمٰن الرحیمہ۔

نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم کریم۔

तारीखे उर्स :- 18 मुहर्रमुल हराम

मजार मुबारक

पीरे कामिल ग़ौसुल अ़ालम हज़रत ख़्वाजा सरकार हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह अलैह उर्फ बड़े दादा मियाँ सरकार ,चिश्ती निजा़मी फखरी सुलेमानी रहमतुल्लाह अलैह , जबलपुर शरीफ मध्य प्रदेश

{ शिजराए सिलसिला ए चिश्तिया , निजा़मिया -फखरिया - सुलैमानिया }

अल्लाहुम्मा स्वल्ले वसल्लिम सैय्यिदिना मुहम्मदिंव व आले सैय्यिदिना मुहम्मदिन सैय्यिदिल अंबियाए व शफीउ़ल यौमुल क़दाए ०

بسم الله الرحمن الرحيم

दे मुझे ऐसी शराबे नाब ऐ परवर दिगार ,,

जिसके पीने से रहे तेरी ही वहदत का खुमार।।

नफ्स सरकश की शरारत से नहीं मुझको करार ,,

वो शुजाअ़त दे करुं ता नफ्स अम्मारा को ख्वार।।

"हाफिज़े सैय्यद बहादुर " पेशवा के वास्ते।।।।

****

 इस्में गिरामी :- हज़रत बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह अस्ल नाम हज़रत सैय्यद हाफिज़ "बहादुर अली शाह " (रजी .) हैं।

मजार मुबारक दादा मियाँ

हज़रत ख़्वाजा सरकार सैय्यद हाफिज़ बहादुर अली शाह बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह हसनी सैय्यदज़ादे हैं। आप का शिजराए नसब हुज़ूर बड़े पीर सरकार हज़रत सैय्यदना गौ़से आज़म दस्तगीर रज़ियलल्लाहू ताआला अन्ह (बगदाद शरीफ) से होते हुए इमाम हसन ए मुज्तबा व मौला अ़ली अलैहिस्सलाम से जा मिलता है।

 वतन :- हज़रत ख़्वाजा सरकार सैय्यद हाफिज़ बहादुर अली शाह बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह उत्तर भारत के एक शहर अम्बेठा उतरप्रदेश , के रहने वाले हैं। तमाम दीनी - दुनियावी मज़हबी उलूम हासिल करने के बाद आप मजी़द इल्म हासिल करने की गरज से देहली शरीफ

तशरीफ ले गये। देहली शरीफ में आपने जामा मस्जिद में कुरान ए पाक हिफ्ज़ किया। फिर आप मुरशिदे कामिल की तलाश में पानीपत से तौंसा शरीफ़ पंजाब (बवक्त पाकिस्तान) जहां सिलसिला ए चिश्तिया निज़ामिया फखरिया सुलेमानीया के अज़ीम सूफी बुज़ुर्ग हज़रत ख्वाजा शाह मुहम्मद सुलेमान तौंसवी माहरवी उर्फ पीर पठान रहमतुल्लाह अलैह से मुलाकात कर मुरीद हुए व ईबादतो रीयाज़त में मशगूल हुए। इसके बाद रमजा़न शरीफ के महीने में अपने पीरो

मुरशिद हज़रत ख़्वाजा शाह मुहम्मद सुलेमान तौंसवी उर्फ
पीर पठान रहमतुल्लाह अलैह के दस्ते मुबारक से सिलसिलाए
चिश्तिया , क़ादरीया की खिलाफत से सरफराज़ हुए व
मुर्शिद के हुक्म से खिदमते दीनो खल्क़ के लिए तौंसा
शरीफ से अम्बेठा वापस अपने शहर आ गये वापस आने के बाद
आपने अपने शहर के लोगों की इस्लाह की।

मज़ारे अक़्दस :- पीरो मुर्शिद दादा मियाँ हज़रत
ख़्वाजा शाह मुहम्मद सुलेमान तौंसवी चिश्ती
रहमतुल्लाह अलैह तौंसा शरीफ पाकिस्तान

जब हमारा मुल्क अंग्रेजों से जंगे आज़ादी की लड़ाई
लड़ रहा था तो आपने भी अपने घरवालों के साथ साथ
वतनपरस्ती का सुबूत देते हुए जंगे आज़ादी की लड़ाई में
शिरकत की। यहां तक की 1857 ई. के जंगे गदर में जब उलमा ए
किराम को फांसी के फंदे पर लटका दिया जा रहा था तो उस
वक्त जंगे आज़ादी की लड़ाई में शामिल होने की वजह से
आपके घर में भी अंग्रेजो ने आग लगा दी। जिस वजह से आपके
अहले आयाल और आपने अम्बेठा से हिजरत की। इस सफर में आप
रहमतुल्लाह अलैह अपने अहलो आयाल के साथ रात में पैदल
सफर करते और दिन में खेत व जंगल में पनाह लेते। आप इस
तरह अम्बेठा से ग्वालीयर तशरीफ़ लाए और कुछ दिन वहीं

क़याम किया फिर आप वहां से नरसिंहपुर जिला (मध्य प्रदेश) में तशरीफ़ ले आए और खिदमते दीन व खल्क काम अंजाम देने लगे और आप हज़रत बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह नरसिंहपुर की एक मस्जिद में इमामत करने लगे। आपने लोगों को वाज़ो नसीहत की और राहे हिदायत की दावत दी और नमाज़ पड़ने की तलक़ीन की , लोग आप की बातों से बहुत मुताअस्सिर हुए और इस तरह नरसिंहपुर में आपके मुरीदों और जानने मानने चाहने वालों का एक अच्छा खासा हलकाह बन गया।

हज़रत ख़्वाजा बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह का अक़्द निकाह :- हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह ने नरसिंहपुर जिले में ही एक अच्छे दीनदार खानदान में सुन्नते रसूलुल्लाह सल्ल्लाहू अलैहि वसल्लम की पैरवी करते हुए निकाह किया। आप रहमतुल्लाह के एक साहबज़ादे मोहतरम भी थे जिनका नाम हज़रत हाफ़िज़ ख़्वाजा सरकार सैय्यद ग़ुलाम मुहियुद्दीन शाह उर्फ "भैया जी " रहमतुल्लाह अलैह है जो कि अपने वक्त के बेहद साहिबे ब -कमाल बुज़ुर्ग शख्सियत गुज़रे हैं।

 फिर एक दिन पीरे कामिल गौ़सुल आ़लम हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह को ग़ैबी हुक्म हुआ कि आप मध्य प्रदेश के शहर जबलपुर तशरीफ ले जाएं। जबलपुर शहर की विलायत के लिए आपको चुना गया है और जबलपुर की सरज़मीन को ज़ीनत बख्शें ....

□□□□□□□□□□□□□

शिजराए चिश्तिया सुलेमानीया मुख्तसिरा :-

अल्लाहुम्मा स्वल्ले वसल्लिम सैय्यिदिना मुहम्मदिंव व
आले सैय्यिदिना मुहम्मदिन सैय्यिदिल अंबियाए व शफीउ़ल
यौमुल क़दाए ०

*بسم الله الرحمن الرحيم

ब हक़्क़े सरवरे ओ़ालम "मुहम्मदे अरबी ",,

ब हक़्क़े "शेरे इलाही " के नामे ऊस्त "अ़ली ",,,

ब हक़्क़े ""नूर मुहम्मद "'' ब "ख्वाजा -ए-संघड़ ",,,,,

ब हक़्क़े "शाह बहादुर अली " जबलपुरी ।।। _

□□□□□□□□□□□□□

✳ हज़रत हाफ़िज़ क़िब्ला सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ
बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह का जबलपुर शहर
की जानिब सफर :-

हज़रत हाफ़िज़ क़िब्ला सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ
बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह को एक दिन ग़ैबी
हुक्म हुआ कि आप जबलपुर तशरीफ ले जाएं और वहां तबलीग़े
दीन का काम सरअंजाम दें लोगों को राहे हिदायत दिखाएं व
सिलसिला ए चिश्तिया का नाम रौशन करें।

✳ उधर हज़रत सरकार मिर्ज़ा आग़ा मुहम्मद शाह नियाज़ी
रहमतुल्लाह अलैह (रानीताल आग़ा चौक जबलपुर)

मज़ार मुबारक:- हज़रत आगा मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलैह जबलपुर

को भी ख्वाब में बशारत हुई की जबलपुर की विलायत के लिए हज़रत हाफ़िज़ ख़्वाजा सैय्यद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह अलैह को चुना गया है। यह हुक़्म सुनते ही हज़रत मिर्ज़ा आगा मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलैह जबलपुर से नरसिंहपुर की तरफ रवाना हुए। नरसिंहपुर पहुंचने के बाद आपने देखा कि हर कोई हज़रत हाफ़िज़ क़िब्ला ख्वाजा सैय्यद बहादुर अली शाह बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह के नरसिंहपुर छोड़कर जाने से अश्क़बार और बेहद उदास है।

✳ हज़रत मिर्ज़ा आगा मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलैह ने बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह से कहा कि "हज़रत जबलपुर की सरज़मीं आप के मुबारक क़दमों के लिए बेताब है।" यह सुनकर बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह ने इरशाद फरमाया कि मुझे पता है। उसके बाद आपने नरसिंहपुर में लोगों को वाजो़ नसीहत की और हज़रत मिर्ज़ा आगा़ मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलैह के साथ जबलपुर शरीफ के लिए रवाना हो गए। जबलपुर शरीफ तशरीफ़ लाने के बाद आपने कुछ दिन हज़रत मिर्ज़ा आगा़ मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलैह के घर में ही क़याम किया और उसके बाद मोतीनाला, बरियातलै (जबलपुर) से कुछ दूरी पर एक आलीशान मस्जिद तामीर करवाई जिसे आज के दौर में "सुलेमानी मस्जिद" के नाम से जाना जाता है। मस्जिद का कुछ हिस्सा हज़रत मिर्ज़ा आग़ा मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह

अलैह (रानीताल आगा चौक) ने भी दिया या दिलवाया और तामीरे मस्जिद में अपना नाम सुनहरे लफ्ज़ों में दर्ज करवाया। इसके साथ साथ हज़रत बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह ने लोगों को वाज़ो नसीहत व राहे हिदायत देने के लिए मस्जिद के बाजू में ही एक खानकाह शरीफ भी तामीर करवाई जिसे आज "खानकाहे सुलेमानीया " के नाम से जाना जाता है और इसके अलावा एक रिहायशी मकान भी तामीर करवाया।

 दिन ब दिन आपके मुरीद , अकीदतमंद और चाहने वालों का काफिला बढ़ता ही गया और आज भी बढ़ता ही जा रहा है। लोग आप हज़रत बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह के फैज़ान से फैज़याब होते हैं यहां तक कि आपके दरबार में आपके चाहने वाले दूर -दूर से आते और अपने दिल की मुराद पूरी होते हुए पाते। आपसे बेतहाशा करामातों का ज़हूर हुआ। आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी पूरी ज़िंदगी तब्लीग़े दीन और खिदमते खल्क़ के लिए वक़्फ कर दी।

 विसाल :- हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह का विसाल 18 मुहर्रमुल हराम 1321 हिजरी में जबलपुर शरीफ में हुआ। आप रहमतुल्लाह अलैह को हलीम शाह का तकिया मंडी मदार टेकरी कब्रस्तान में उस जगह मदफून किया जिस जगह आप रहमतुल्लाह अलैह खुदा ताआला की याद इबादतो रियाज़त में मशगूल रहते। आज भी आपके मज़ारे मुबारक में दिन रात आपके चाहने वालों का हुजूम लगा रहता है। लोग आज भी आपके फैज़ान से मालामाल हो रहे हैं।

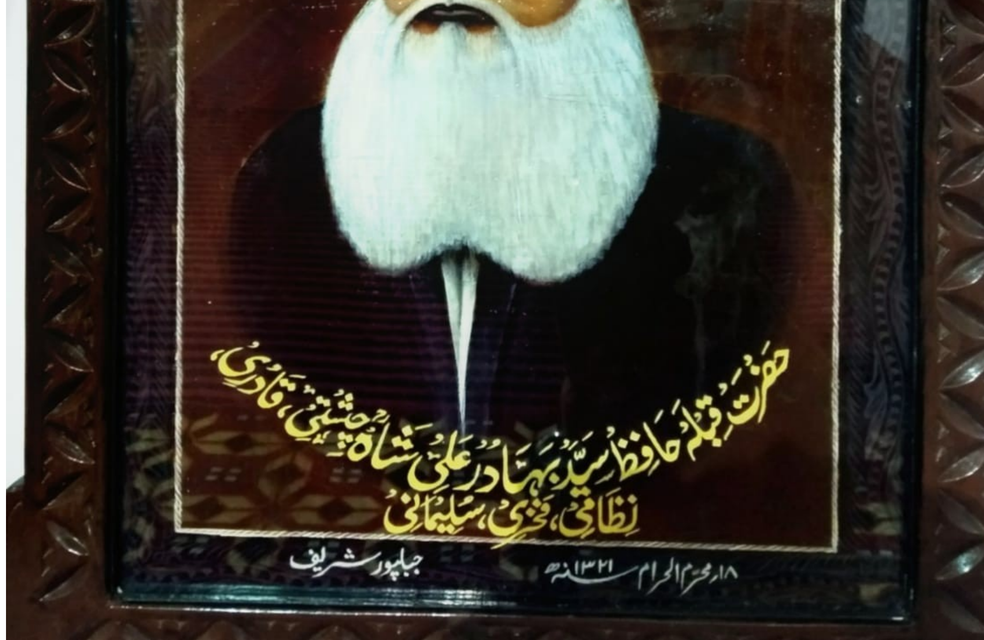
حضرت قبلہ حافظ سید بہادر علی شاہ چشتی، قادری،
نظامی، فخری، سلیمانی
جبلپور شریف
۱۸ محرم الحرام سنہ ۱۳۲۱ھ

[illegible] :- [illegible]

[illegible]) [illegible] :-

{1} [illegible] "[illegible]" [illegible], [illegible]

आज भी लोग आपकी आल औलाद बुज़ुर्ग से मुरीदो बैअ़त होकर
दाखिले सिलसिला हो रहे हैं आपका मज़ारे शरीफ हज़रत
ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा
मियां रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद
ग़ुलाम मुहियुद्दीन शाह उर्फ भैया जी रहमतुल्लाह अलैह
के क□्रे अनवर के दरमियान में ही मौजूद है।

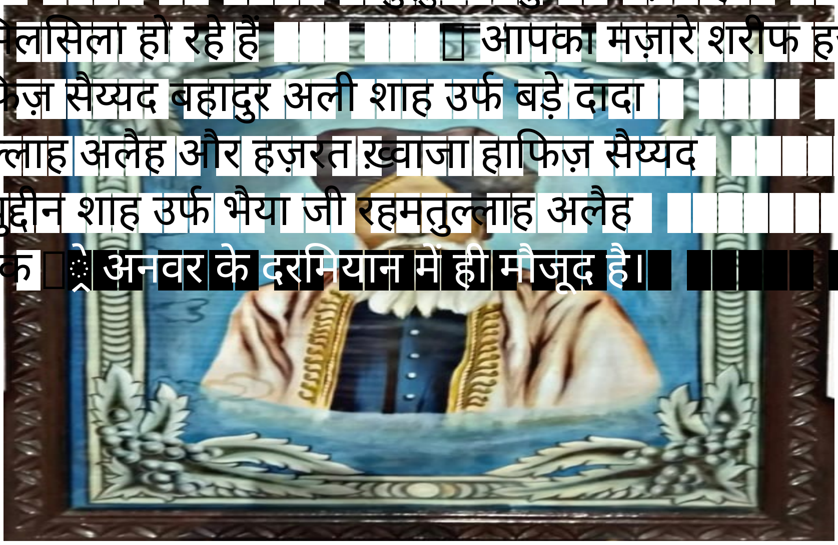

तस्वीर :- हज़रत अब्दुल मजीद शाह रहमतुल्लाह अलैह

{2} हज़रत मौलाना हकीम अब्दुल ग़नी सहाब रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर)। हज़रत बड़े दादा मियां सरकार रहमतुल्लाह अलैह रिश्ते में आपके फुप्पा जान लगते हैं। आप बेहद सादगी पसंद शख्सियत थे। बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह के विसाल शरीफ के बाद और हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद अब्दुल मजीद शाह रहमतुल्लाह अलैह के जोबट शरीफ अपने अहलो आयाल के पास जाने के वक्त खानकाहे सुलेमानीया की बागडोर आप ही संभालते थे। आपका मज़ारे शरीफ आहात-ए दरगाह शरीफ दादा मियां (जबलपुर) में ही मौजूद है।

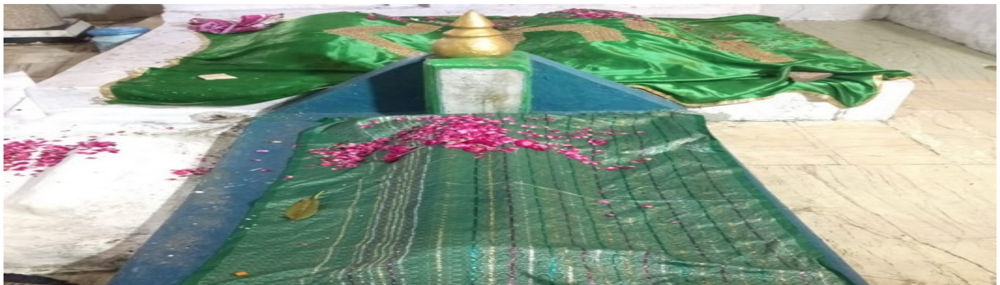

मजा़र मुबारक :- हज़रत मौलाना अब्दुल ग़नी रहमतुल्लाह अलैह जबलपुर

{3} ⃞ गदाए हाफिज़ हज़रत मियां नत्थे खान उर्फ ''केवड़िया जी " रहमतुल्लाह अलैह। आप रहमतुल्लाह अलैह बयक्त वक्त हज़रत बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह की खिदमत में हाज़िर रहते और सिर्फ आपको ही बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने में खानकाहे सुलेमानीया की दहलीज में सोने का और वहीं रहने का शर्फ हासिल है। इसलिए आप रहमतुल्लाह अलैह को "केवड़िया जी " के नाम से जाना जाता है। आप रहमतुल्लाह अलैह बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदे खास में से एक हैं। आपका मज़ारे शरीफ भी आहात -ए दरगाह शरीफ दादा मियां में मौजूद है।

मज़ार मुबारक :- हज़रत नत्थे खान रहमतुल्लाह अलैह जबलपुर

हज़रत हाफिज़ ख्वाजा सैय्यद बहादुर अली शाह दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह ने इसके अलावा कमो -बेश 50 बुजुर्गों को अपनी और सिलसिला ए चिश्तिया की खिलाफत से नवाज़ा।

जैसे, हज़रत ख़्वाजा सैय्यद साहब नरसिंहपुर वाले रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत ख़्वाजा मुंशी जी नरसिंहपुर वाले रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत अल्लामा मौलाना मुल्ला अब्दुल करीम दाजी रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर)।

इसके अलावा आप रहमतुल्लाह अलैह के और भी दूसरे खुलफा हिन्दुस्तान की मुख्तलिफ जगहों में फैल कर तब्लीग़े दीन और रुश्दो हिदायत का काम जारी रखा

सैय्यद हैं "बहादुर" हैं क़लन्दर हैं वली हैं,,

क्या क्या मैं कहूं आपको सब कुछ हैं शहा आप।।

सब आपके दम से है जबलपुर की ज़ीनत,,

कहलाते हैं जबलपुर के सुल्ताने शहा आप।।

अज़ कलाम:- सूफिए हिन्द हज़रत सरकार सैय्यद "गुल" अख्तर अशरफ अल अशरफीयुल जिलानी रहमतुल्लाह अलैह, किछौछा शरीफ।}

मज़ार मुबारक :- हज़रत गुल मियां रहमतुल्लाह अलैह किछौछा शरीफ

 करामत :-

अफगानी पठानों का बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह के हाथों मुरीद होना :-

 हज़रत ख़्वाजा शाह मुहम्मद सुलेमान तौंस्वी अल मारूफ "पीर पठान" रहमतुल्लाह अलैह, (तौंसा शरीफ पाकिस्तान) के उर्से अक़दस के मौके अक्सर अफगानी पठानों का क़ाफिला आया करता था, जो _पीर पठान रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदीन, मुतवस्सलीन (मानने, चाहने वाले) थे। बड़े दादा मियां हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर शरीफ, मध्य प्रदेश) भी अपने पीरो मुर्शिद की बारगाह में हाज़िरी के लिए जाया करते थे।

एक दफा अफग़ानी पठानों की बस्ती पर डाकुओं ने हमला किया, जिस वजह से डाकुओं और कबीले वालों में खूनी जंग शुरू हो गई। जिसमें डाकूओं की फ़ौज़ अफगानी पठानों की फोज पर भारी पड़ रही थी तब क़बीले वालों को लगा कि हमारी शिकस्त से हमारी मां, बहन, बेटियों की इज़्ज़त आबरू को शदीद खतरा नज़र आ रहा है, साथ ही पूरी बस्ती लुटती पिटती तबाह व बर्बाद होने के मुकम्मल आसार नज़र आ रहे हैं।

 तभी क़बीले के सरदार और साथ के लोगों ने "या पीर पठान अल-मदद" का नारा लगाया। नारा लगाने के कुछ ही देर में एक अंजान घुड़सवार हाथ में तलवार लिए क़बीले वालों की मदद को आते नज़र आए और डाकुओं पर वार पर वार करते गए यहां तक की क़बीले वालों को फतह मिल गई। क़बीले वाले खुशियों का इज़हार करते हुए घुड़सवार की तरफ शुक्रिया अदा करने के लिए बढ़ने लगे तो घुड़सवार मुस्कुराते हुए वापस हुए और देखते ही देखते रुपोश (आंखों से ओझल) हो गए।

 पठान जंग तो जीत गये लेकिन सोच में थे कि घुड़सवार था कौन?

किसी ने कहा कि मैंने पीर पठान रहमतुल्लाह अलैह (तौंसा शरीफ पाकिस्तान) के दरबार में देखा है। तब क़बीले के सरदार ने अपने कबीले के पठानों से कहा कि "उन घुड़सवार को जाकर तलाश करो और पता लग जाए तो खबर करो, हम सब अपने खैर-ख्वाह का शुक्रिया अदा करेंगे"।

 क़बीले के सरदार को एक रात बशारत हुई कि जल्द ही घुड़सवार से मुलाक़ात होगी।

इस क़बीले के कुछ लोग पलटन (अंग्रेज़ी फौज) में शामिल हो गए जो कि मुल्के हिन्दुस्तान में जगह जगह तैनात रहते, जिसकी एक कम्पनी का ब्रांच जबलपुर शरीफ मध्यप्रदेश भी था।

इसी अफगानी पठानों की पलटन के सिपाहियों का गुज़र बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह की खानकाहे सुलेमानीया (सुलेमानी मस्जिद) के सामने से हुआ तो लोगों की भीड़ लगी देखी, पता चला कि बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह की खानकाह है, और आज दादा मियां के पीरो मुर्शिद शहबाज़

ए चिश्त हज़रत ख़्वाजा शाह मुहम्मद सुलेमान तौंस्वी अल मारूफ "पीर पठान " रहमतुल्लाह अलैह की तारीख है इस लिए चहल पहल और लोगों की भीड़ है। पलटन में अफगानी पठान सिपाहियों को हैरत हुई कि पीर पठान रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदो खलीफा यहां इतनी दूर मौजूद है। लिहाज़ा देखना चाहिए कि है कौन। जैसे ही बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह पर नज़र पड़ी तो हैरानी की इंतिहा न रही अफगानी पठान सिपाही आपस में बात करने लगे कि ये तो वही घुड़सवार हैं जिसने हमारे क़बीले की डाकुओं के खिलाफ मदद की थी।

 अफगानी सिपाहियों ने ये खबर अपने क़बीले तक पहुंचाई फिर कुछ वक़्त के बाद अफगानी पलटन और क़बीले वालों की अच्छी खासी तादाद बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह से मुरीद होने के लिए जबलपुर शरीफ आई। तब खानकाह शरीफ से लेकर शाह मम्मद के घर (मोतीनाला अस्पताल के आगे) तक रस्सा बांधा गया और रस्सा पकड़ कर बड़े दादा मियां हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह क़ादरी ,चिश्ती , निज़ामी फख़री सुलेमानी रहमतुल्लाह अलैह ने सभी अफगानी पठानों को मुरीद कर दाखिले सिलसिला किया।

विसाले "हाफिज़े " वाला गौहर है ,,

महे फैज़े "सुलेमान " जलवागर है।।

मऐकैफे "यदुल्लाह "

बा रुए अ़र्श "मेअराजे" नज़र है।।

{ अज़ कलाम:- आलीजनाब उस्ताद गुलाम मुहम्मद आगाज़। }

करामत:- हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अली शाह दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर)

सरदार ए जिन्नात के नाम खत:-

हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह "बड़े दादा मियां" रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर) के एक मुरीद जो जबलपुर के मुहल्ला बड़ी मदार टेकरी में रहते थे, और हर जुमेरात को खानका़हे सुलेमानिया (सुलेमानी मस्जिद के बाजू में) की फातेहा ख्वानी में बिला नाग़ा शिरक़त करते थे। कुछ यूं हुआ कि 2-3 हफ्ते उनकी शिरकत नहीं हुई तो

बड़े दादा मियां हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह अलैह ने कुछ मुरीदीन से हाल मालूम किया तो पता चला कि आज कल काफी परेशान रहते हैं तब दादा मियां ने खबर कहला कर दूसरे दिन बुलवाया।

जब वो साहब हाज़िर हुए और क़दम बोसी के बाद अपना हाल बयान किया और फातेहा में न आने की माज़रत चाहते हुए वजह बयान की तो आंखों से आंसू जारी थे। उन्होंने बताया कि मेरी बेटी की तबीयत खराब है। न जाने क्या हुआ है कि गुमसुम सी रहती है और जब बोलती है तो आवाज़ भारी रहती है, ऐसा लगता है कि इस पर कोई जादू का असर है या कोई सवार है। दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह कुछ देर खामोशी के बाद अपने मुरीद से फरमाया तुम्हारी बेटी पर जिन्नात ने क़ब्ज़ा किया है और तसल्ली की तलक़ीन फरमाते हुए एक ख़त दिया और फरमाया ईशा की नमाज़ यहां अदा करके रानीताल कब्रिस्तान वाले मैदान में चले जाओ (नोट:- मस्जिद सुलेमानी से रानीताल की दूरी लगभग 2 कि.मी. से ज़्यादा है) वहां एक मजलिस लगेगी, जब मजलिस का कुछ वक़्त गुज़र जाए तो तुम सदा देना कि मेरी फरियाद सुनी जाए और जब तुमसे पूछा जाए तो ये ख़त देकर कुछ देर रूकना इंशाअल्लाह तुम्हारे हक़ में फैसला होगा। ऐसा ही हुआ जब ख़त मजलिस के सरदार को दिया तो सरदार ने ख़त खोला और वअलैकुम अस्सलाम कहा और फिर हुक्म दिया कि उसे फौरन गिरफ्तार कर के यहाँ लाओ जो इस शख्स की बेटी को क़ब्ज़े में रखा है। कुछ देर के बाद सरदार ने कहा कि आप बेफिक्र वापस जाओ और अल्लाह के वली (दादा मियां) से मेरा सलाम कहना और मेरी क़ौम के इस शख्स की गुस्ताख़ी के लिए मैं शर्मिंदा हूँ और जिसने यह गुस्ताख़ी की है उसे सज़ा दे दी गई है।

वापस आ कर मुरीद साहब ने सारा माजरा दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह से बयान किया। जब घर वापस लौटे तो देखा बेटी बिल्कुल ठीक हो गई थी।

सुबहान अल्लाह

करामत:- हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अली शाह दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर)

मुरीद की मदद:-

हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह "बड़े दादा मियां" क़ादरी, चिश्ती, निज़ामी, फख़री, सुलेमानी रहमतुल्लाह अलैह नमाज़े मग़रिब के लिए वुज़ू फरमा रहे थे कि अचानक आपका चेहरे मुबारक की कै़फियत बदली और आ़लम ए जलाल में आकर बधना (मिट्टी का बना लोटा) हवा में फेंक दिया जो सामने की दीवार पर जा लगा और चकनाचूर हो गया, तभी मुरीदीन घबरा गए और एक दूसरे से आपस में गुफ्तगू करने लगे कि दादा मियां का जलाल में आकर बधना दीवार पर इतनी ज़ोर से दे मारना समझ से बाहर है, अल्लाह खैर करे। अभी लोग आपस में बातें कर ही रहे थे कि दादा मियां ने पुरसुकून कैफियत में फरमाया कि मियां नत्थे खां ज़रा दूसरे बर्तन में पानी ले आएं, फिर दादा मियां ने दूसरे बर्तन के पानी से वुज़ू फरमाया और इबादत में मशगूल हो गए।

कुछ दिनों के बाद एक मुरीद साहब अपने बीवी बच्चों के साथ दादा मियां की बारगाह में हाज़िर हुए एक एक करके सभी ने दादा मियां की दस्तबोसी की, फिर मुरीद साहब ने भी दस्तबोसी की और हाथ को पकड़े हुए अपना माथा हाथ पर रख कर

रोते हुए कह रहे थे कि सरकार ने इमदाद फरमा कर मेरी जान और मेरे खानदान पर जो करम नवाज़ी फरमाई है तो दिल इस बात पर भर आता है और मुतमइन भी रहता है कि क़यामत के दिन भी आपकी मदद हासिल होगी, ये सुनकर दादा मियां ने फरमाया अल्लाह ने चाहा तो खात्मा ईमान के साथ होगा और आखिरत में भी मुतमइन रहोगे। मुलाक़ात के बाद दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह अपने हुजरे में तशरीफ ले गए उसके बाद वहाँ मौजूद लोगों ने मुरीद साहब से रोने का सबब जानना चाहा तो मुरीद साहब ने कहा कि वो कुछ दिनों के लिए शहर से बाहर पास के गांव गए हुए थे वापसी में जंगल का रास्ता पार करने में देर हो गई और सूरज डूबने का वक्त आ गया और सड़क किनारे सामने के पहाड़ पर एक शेर ने मुझे देख कर दहाड़ मारी और मैंने *"यादादामियांअलमदद"* की सदा बुलंद करते हुए अपने पीरो मुर्शिद दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह का तसव्वुर किया तो देखता हूं कि कोई चीज़ आ कर शेर के सर पर बहुत ज़ोर से लगी और शेर भाग गया फिर मैंने बाक़ी का रास्ता तय किया और कल ही घर पहुंचा और आज अपने पीर की बारगाह में हाज़िर हुआ। जब लोगों ने वक़्त मिलाया तो पाया कि दादा मियां ने जो दीवार पर बधना मारा था वो इन साहब की मदद के लिए शेर पर लगा और हम लोगों को अब समझ आया कि मामला ये था।

सुबहान अल्लाह।।।

____

करामत:- हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अली शाह दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह (जबलपुर)

आ़मिल आए क़दमों में:-

एक बहुत कामयाब और मशहूर आमिल जो जबलपुर के मुहल्ला मुक़ादम गंज में रहा करते थे। और उनका मज़ार शरीफ आज भी मुक़ादम गंज मस्जिद (जबलपुर) के सामने मौजूद है, और लोग उनके मजा़र मुबारक को छोटे दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह के नाम से जानते हैं।

आमिल साहब अपने अमलियात और शोहरत की वजह से किसी को खातिर में न लाते थे, लेकिन अक्सर लोग उनसे दादा मियां हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैयद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह अलैह का तज़किरा किया करते तो आमिल साहब अपनी आदत के मुताबिक़ दादा मियां को भी खातिर में न लाते हुए खुशफहमी में भला बुरा कह देते थे। एक दिन दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह ने आमिल साहब से मुलाक़ात का इरादा किया। अपने खादिम से बग्घी बुलाने को कहा तब वहां मौजूद लोगों ने दादा मियां से अर्ज़ किया कि क़िब्ला हुज़ूर वहां न जाएं वो आमिल साहब किसी को खातिर में नहीं लाते और औल-फौल बोलते हैं वग़ैरह वग़ैरह, लेकिन दादा मियां ने कहा कि मुझे मुलाक़ात करनी है इसलिए फौरन बग्घी बुलाओ। दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म पर बग्घी आ गई और दादा मियां ने मुक़ादम गंज चलने को कहा फिर बग्घी आमिल साहब के घर जा कर रुकि।

दादा मियां ने आमिल साहब से मुलाक़ात की तब आमिल साहब ने आने का सबब पूछा तो दादा मियां ने कहा कि साहब फलां चीज़ के बारे में मालूमात चाहिए लिहाज़ा आप अपने मुवक्किलों से कहें कि वो पता लगा कर बताएं। आमिल साहब ने कहा कि ये तो कोई बड़ी बात नहीं है अभी हुक्म देता

हूँ अपने मुवक्किलों को, और फिर आमिल साहब ने अपने मुवक्किलों को हुक्म दिया।

काफी देर के बाद आमिल साहब ने देखा कि मुवक्किल अपनी जगह से हिले भी नहीं तो आमिल साहब ने जलाल में कहा कि तुम लोगों ने सुना नहीं या फिर मेरा हुक्म मानने से इंकार है तो मुवक्किलों ने जवाब दिया कि "जब एक आमिल और एक वली दोनों एक साथ मौजूद हों तो हम पर वली की इताअत लाज़िम है लिहाज़ा हमें मुआफ करें इनके (दादा मियां) सामने आपका (आमिल साहब) हुक्म बजा लाना मुमकिन नहीं"। बस इतना सुनना था कि आमिल साहब दादा मियां के क़दमों में गिर कर अर्ज़ करने लगे कि हुज़ूर मुझे मुआफ फरमाएं कि मैंने आप को पहचानने में भूल की है, मुझे अपनी खिदमत में क़ुबूल फरमाएं। दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह ने कहा कि फिलहाल मैं चलता हूँ इंशाअल्लाह वक़्त आने पर आपकी बात पर ग़ौर करूंगा, और दादा मियां वहां से आ गए। आमिल साहब अक्सर दादा मियां से मुलाक़ात के लिए खानकाह शरीफ आते, मस्जिद में नमाज़ भी अदा करते और मुरीद होने का इरादा लिए खाली हाथ वापस चले जाते।

काफी अर्से (वक़्त) के बाद दादा मियां हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैयद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह अलैह ने उनको दाखिल ए सिलसिला कर मुरीद किया और दुआओं से नवाज़ा।

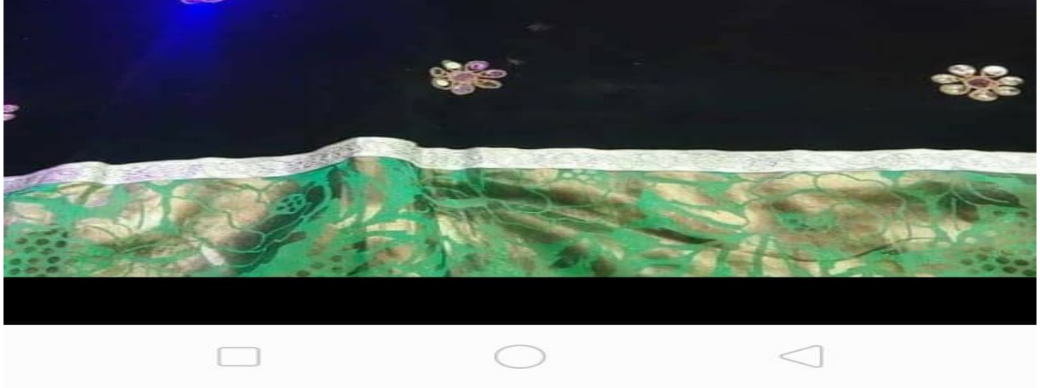

मज़ार मुबारक :- छोटे दादा मियां हज़रत सरफराज़े आलम उर्फ आमिल साहब रहमतुल्लाह अलैह मुकादमगंज जबलपुर

करामत , आग का बुझाना :-

 पीरे कामिल हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने में खानकाहे सुलेमानीया के पास जनाब अमीर बख्श नाम के एक शख्स रहा करते थे और आज भी उनके घर के लोग सुलेमानी मस्जिद के पास आबाद हैं। उस दौर के लोग ठंड से बचने के लिए और बरसात के वक्त अपने घरों में पहले से ही आग जलाने के लिए लकड़ियां और कंडे इकट्ठा करके रखा करते थे। जनाब लेकिन किसी वजह से अचानक लकड़ियां और कंडो में आग लग गई जो सभी जगह फैलने लगी। लोगों ने आग बुझाने की बहुत कोशिश की लेकिन आग काबू में आने का नाम नहीं ले रही थी। आग लगने की वजह से पूरे मोहल्ले में अफरा -तफरी का माहौल मच गया था।

 शोर -शराबा सुनकर हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह खानकाह

शरीफ से बाहर आए और लोगों से पूछा कि क्या माजरा है आखिर इतनी अफरा-तफरी क्यों मची हुई है। है तो लोगों ने इरशाद फरमाया की हज़रत गजब हो गया अमीर बख्श के घर में आग लग गई है आग को बुझाने की बहुत कोशिश की गई लेकिन आग काबू में नहीं आ रही है। लोगों की बातें सुनकर हज़रत क़िब्ला ने फरमाया अच्छा ऐसी बात है चलो मुझे वहां ले चलो। फिर हज़रत क़िब्ला अमीर बख्श के घर पहुंचे और हज़रत ने भड़कती हुई आग को देखा और फौरन ही एक शख्स को हुक्म दिया कि जाओ और कुरआ़न शरीफ लेकर आओ। जैसे ही वह शख्स कुरआ़न शरीफ लेकर आया तो हज़रत किब्ला ने कुरआ़न शरीफ को खोल कर भड़कती हुई आग की तरफ कर दिया खुदा ताआ़ला का ऐसा करम हुआ कि आग देखते ही देखते कुछ ही लम्हों में भुज गई। हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह कि यह करामत देखकर जनाब अमीर बख्श की जान में जान आई और उन्होंने हज़रत किब्ला का उन्होंने शुक्रिया अदा किया।

सुबहान अल्लाह।।।

सुलेमानी मस्जिद जबलपुर की तामीर :-

सुलेमानी मस्जिद जबलपुर

हज़रत हाफिज़ क़िब्ला सैय्यद बहादुर अली शाह रहमतुल्लाह अलैह जब आप नरसिंहपुर से जबलपुर तशरीफ़ लाए तो कुछ समय हज़रत मिर्ज़ा आगा मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलैह (आग़ा चौक जबलपुर) के यहां क़याम किया, फिर हज़रत आग़ा मुहम्मद शाह रहमतुल्लाह अलैह ने आप को मोतीनाला जबलपुर के पास ज़मीन दी या दीलवाई, खरीदी उस ज़मीन पर आप ने सुन्नते रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की पैरवी करते हुए एक मस्जिद बनवाई। मस्जिद से मिली हुई ज़मीन पर एक रिहायशी इमारत व खानक़ाह शरीफ भी तामीर करवाई जिसमें कई लोग आप से रोज़ाना मिलने के लिए आते व फ़ैज़ हासिल करते।

हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अली शाह "दादा मियां" رحمة الله عليه ने मस्जिद की तामीर का इरादा फरमाया

फिर अपने अपने मुरिदीन के साथ काम शुरू किया। उस वक़्त पानी की ज़रूरत को पूरा करने के लिए आप रहमतुल्लाह अलैह खुद भी अपने कांधों पर मश्क़ उठा कर पानी लाया करते उस वक़्त की तामीर और सुलेमानी मस्जिद की दीवारें और छत आज भी मजबूती के साथ अपनी जगह पर क़ायम है।

मस्जिद में वुज़ू के लिए हौज़ बनाई गई। अक्सर लोग इस बात पर मुस्तहिक़ थे कि इसके पानी से बुजुर्गों ने वुज़ू किया है और इस हौज़ के पानी में शिफा है। इसलिए अक्सर लोग अल्सर के मर्ज़ की शिफा के लिए इस हौज़ के पानी को पी कर और पिलाकर शिफायाब हुआ करते थे।

मस्जिद सुलेमानी का जो आज नाम है पहले ये नाम नहीं था पहले सुलेमानी मस्जिद को लोग "अंधे हाफिज़ जी" की मस्जिद के नाम से याद किया करते थे।

हज़रत ख़्वाजा हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अली शाह "दादा मियां" رحمة الله عليه के विसाल के कुछ वक्त के बाद खानवादए जोबट शरीफ के बुज़ुर्ग व जबलपुर के अहले इल्म हज़रात ने मुरीदीन ओ मुतावस्सिलीन की गुज़ारिश पर "मस्जिद सुलेमानी" नाम पसंद फरमाया और फिर यही नाम हो गया। आज भी सुलेमानी मस्जिद में मौजूदा दौर के ज़रूरीयात के हिसाब से काम होता रहता है

नोट **:-** हज़रत हाफिज़ ख्वाजा सैय्यद बहादुर अली शाह उर्फ बड़े दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह के नबीना होने की वजह से लोग सुलेमानी मस्जिद को "अंधे हाफिज़ जी की मस्जिद" कहा करते थे।

हज़रत क़िब्ला के नाबीना होने की बड़े बुजुर्गों से दो रीवायात मिलती हैं। अव्वल यह कि जंगे आजादी में शरीक होने की वजह से अंग्रेजों ने आपके घर (अंबेठा, सहारनपुर) में आग लगाई थी तो उस वक्त आपके ऊपर कुछ गिर जाने की वजह

से आप नबीना हो गए। दूसरा यह है कि आप किसी मर्ज़ में मुब्तिला हुए जिसकी वजह से आपके आंख मुबारक से रौशनी चली गई।

{ वल्लाहू तआ़ला आ़लम }

लेकिन अस्ल बात यह है कि आप रहमतुल्लाह अलैह नाबीना होने के बावजूद हर शख्स को ग़ैबी तरीके से देख लेते यहां तक कि आप रहमतुल्लाह अलैह लोगों के दिलों का हाल जान लेते। और अगर कोई आपके पास परेशानी लेकर आता तो आप रहमतुल्लाह अलैह खुदा ताआ़ला के हुक्म से परेशानियां दूर फरमा देते।

मिन्जानिब :- दादा मिया ग्रुप जबलपुर व् जोबट शरीफ़

[illegible] :- सैय्यद नायब अली
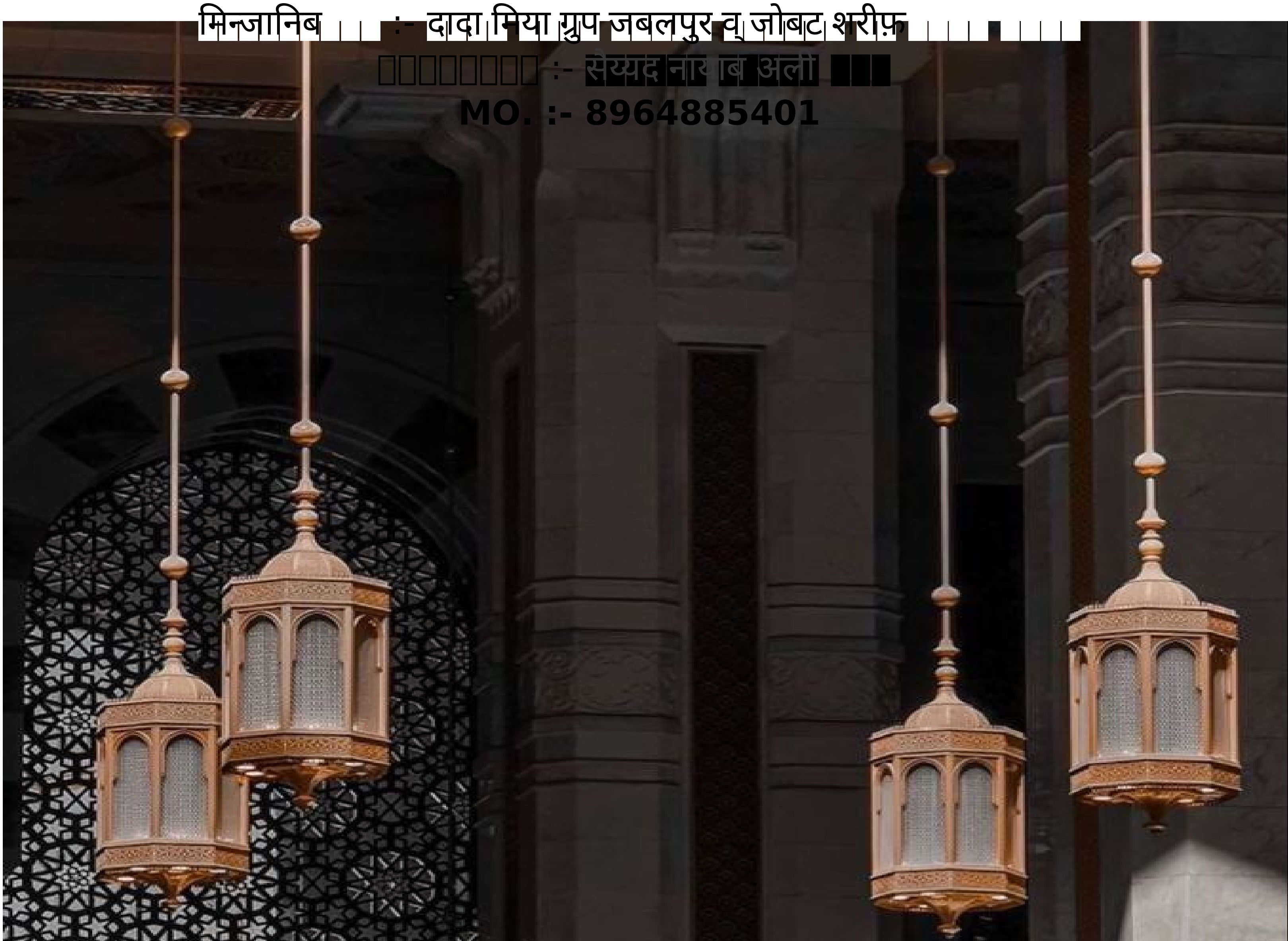
MO. :- 8964885401